स्नातक तृतीय खण्ड हिंदी प्रतिष्ठा, पंचम पत्र
— प्रो० हरेकृष्ण झा 'हरि' एसोसिएट प्रोफेसर,
हिंदी विभाग, जे० एन० कॉलेज, मधुबनी।

17 JUNE • TUESDAY

'सिंदूर की होली' के आधार मुरारी लाल का चरित्र-चित्रण

मुरारीलाल समस्या नाटककार लक्ष्मीनारायण मिश्र की नाट्य-कृति सिंदूर की होली का एक केन्द्रीय पात्र है। इस नाटक के समस्त कथानक के मध्य वह अवस्थित है तथा आद्यन्त वह सभी पात्रों एवं घटनाओं से सम्पृक्त है। नाटककार ने इसके चरित्र का निर्माण अनेक विरोधी वृत्तियों एक साथ मिलाकर किया है।

मुरारी लाल डिप्टी कलक्टर है। समाज में वह प्रतिष्ठित और सम्मानीय व्यक्ति है। नाटक के आरम्भ में ही उसके बंगले की शान-शौकत के वर्णन के माध्यम से पाठक और दर्शक को उसके पद के दर्शन लेखक ने करा दिए हैं।

मुरारीलाल डिप्टी कलक्टर के रूप में न्याय प्रणाली से सीधे सम्पर्क में है। परन्तु वह स्वार्थी, चालाक, धूर्त और घूसखोर है। वह अर्थ-लोलुपता के कारण अपने मित्र की हत्या जैसे घृणित अपराध भी करता है। अपने मित्र को भाँग पिलाकर नदी में धकेल देता है। इतना ही नहीं जब भगवंत सिंह अपने भतीजे रजनी कांत की हत्या करवाने की योजना के बारे में मुरारी लाल से बताता है, तो उससे दस हजार रुपये लेता है और बातचीत के क्रम में जब भगवंत सिंह उसे बताता है कि रजनी कांत इस समय तक मारा जा चुका होगा। इस पर वह चौंक कर कहता है — 'मारा गया होगा? कैसे मारा गया होगा? क्यों? इसपर मुरारी लालको भगवंत सिंह उतना और रुपये देने का प्रलोभन देता है, तो मुरारीलाल को अर्थ लोलुपता उसे विवेकहीन बना देता है। वह कहता है — लेकिन.... अच्छा उतना ही नहीं उससे चार गुना!' उसे पैर से ठेलते हुए कहता है — ... उससे कम नहीं। धरती फोड़कर — आकाश छेदकर ... जहाँ से हो सके उससे कम नहीं।' इसके पहले भी वह माहिर अली से कहता है — 'मनोज के विलायत जाने का खर्च इनसे वसूल कर लो!'.... इसी में तुम्हारी चालाकी है।' मुरारीलाल का कार्य समाज को न्याय दिलाना है, परन्तु धन-लिप्सा के कारण वह न्याय नहीं अन्याय ही करता है।

2014 मुरारी लाल के चरित्र का एक दूसरा पक्ष भी है। वह धन-लिप्सा में अपने मित्र की हत्या तो कर देता है। परन्तु प्रायश्चित के रूप में उसके पुत्र मनोज शंकर को

'हर्गिज नहीं, आप ही सोचिए दूसरों के लिए दफ्तर की व्यवस्था तो आप करते हैं; आपके दफ्तर की व्यवस्था कौन करे। आप अपनी दुर्बलताओं को छिपाने के लिए ... है। मेरे साथ परिवार का कोई अर्थ नहीं।' वह मनोज को पुत्र मानकर उसकी प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति करता है। वह उसके प्रति ममत्व का भाव रखता है। वह रिश्वत के पैसे से मनोज को उच्च शिक्षा के लिए विलायत भेजना चाहता है। वह मास्टर से स्पष्ट शब्दों में कहता है — 'तुमको और मनोज शंकर को प्रसन्न रखने में मेरा सब कुछ बिगड़ जाय, तब भी मुझे चिंता नहीं।'

मुरारीलाल में चारित्रिक दुर्बलता भी है, तभी तो वह चालीस वर्ष की अवस्था में वह अपनी पुत्री चन्द्रकला की आयु से भी दो वर्ष कम की बाल विधवा मनोरमा की ओर आकर्षित होता है, उसे अपने जाल में फँसाना चाहता है। परन्तु मनोरमा उसकी मानसिकता को भाँप जाती है और वहाँ जाना चाहती है। जब मुरारीलाल मनोरमा से यह कहता है कि — 'मेरे घर को ही अपना घर समझ लेने में तुम्हें आपत्ति क्या है? इस पर मनोरमा पुरुष की कामी प्रवृत्ति के सम्बन्ध में मुरारीलाल से कहती — 'क्षमा कीजिएगा, पुरुष आँख के लोलुप होते हैं, विशेषतः स्त्रियों के सम्बन्ध में, मृत्यु शय्या पर भी सुन्दर स्त्री इनके सबसे बड़ा लोभ हो जाती है।'

यों तो मुरारीलाल के चरित्र में अनेक दोष हैं, परन्तु कई स्थलों पर उससे सहानुभूति भी होती है। धन-लिप्सा के कारण वह अपने मित्र की हत्या तो कर देता है परन्तु बाद में इस कुकृत्य के लिए वह प्रायश्चित भी करता है। इस बुरे कर्म के लिए उसके मन में हमेशा अधिगनता बनी रहती है। वह कहता है — 'मुझे उस बात का बड़ा दुःख है। मनोज अगर जान जायगा कि उसके पिता ने मेरी ही वजह से आत्महत्या की थी -- दस वर्ष का समय निकल गया -- अभी तक तो छिपी हुई है। लेकिन अगर किसी दिन खुल गयी तो मेरे मुँह पर स्याही पुत जायगी और फिर मैं किसी काम का नहीं रहूँगा।' इसी पाप के प्रायश्चित के लिए न केवल वह मनोज को प्रसन्न रखना चाहता था अपितु अपनी पुत्री चन्द्रकला से मनोज का विवाह भी कराना चाहता था। मुरारीलाल को मनोज की उदासीनता से दुःख होता है और उसकी इच्छा भी पूरी नहीं हो पाती है।

विवेच्य नाटक में मुरारीलाल के चरित्र में कई स्थलों पर अन्तः संघर्ष दिखाया गया है जो उसके चरित्र को सार्थक और यथार्थवादी बनाता है। उसका अन्तर्द्वन्द्व रजनीकांत की हत्या में भगवंत सिंह द्वारा प्रलोभन अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाता है और लोभवृत्ति के कारण एक उसका मन रिश्वत लेने के लिए प्रेरित कर रहा है तथा दूसरी ओर उसका चेतन मन उसे इस कृत्य के लिए रोकता है। वह नहीं चाहता है कि रजनीकांत मारा जाय लेकिन धन के लालच में वह भगवंत सिंह की सहायता करता है।

मुरारीलाल के चरित्र में अच्छाई एवं बुराई दोनों विद्यमान हैं। इस समस्या नाटक में लक्ष्मीनारायण मिश्र ने व्यंग्य के माध्यम से परिस्थितियों और परिवेश का यथार्थ चित्रण किया है। मुरारीलाल के माध्यम से आधुनिक शिक्षा प्रणाली एवं न्याय प्रणाली पर तीखा व्यंग्य किया गया है —: ० —